Toppersnotes®
Unleash the topper in you

CGPSC

राज्य सिविल सेवाएँ

प्रीलिम्स

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग

भाग - 4

आधुनिक इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	1
2	1857 के पूर्व प्रशासन	12
3	1857 का विद्रोह	16
4	1858 के पश्चात् प्रशासनिक परिवर्तन	22
5	सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन	25
6	राष्ट्रवाद का जन्म (मध्यम चरण 1885–1905)	37
7	उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग चरमपंथी चरण	42
8	जन आंदोलन गांधीवादी युग (1917–1925)	55
9	स्वराज के लिए संघर्ष (1925–1939)	64
10	स्वतंत्रता की ओर (1940–1947)	82
11	स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण	92
12	महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ	100

1 CHAPTER

भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

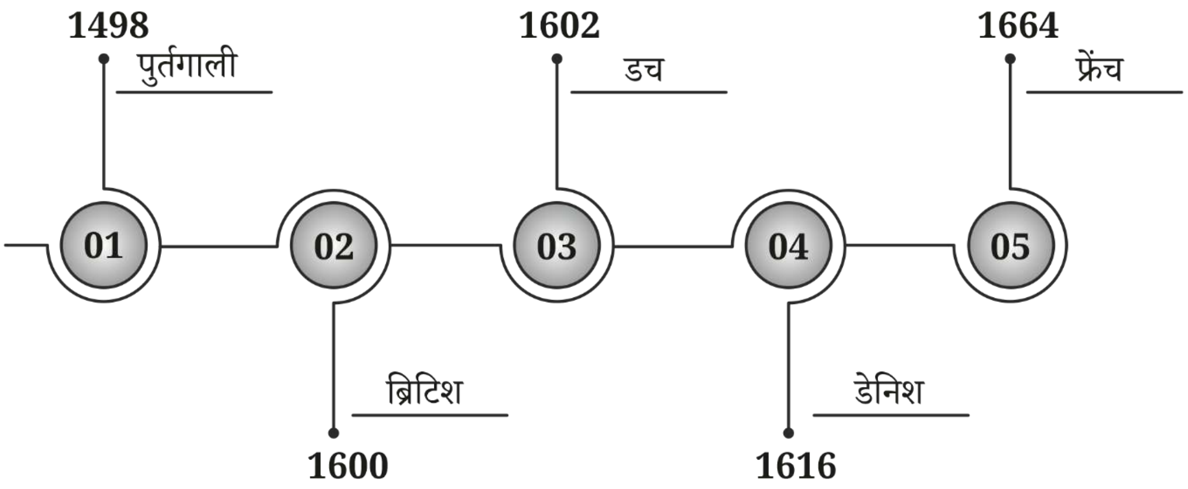

यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक

- कमजोर शासक और विभाजित क्षेत्रीय शक्तियां:
  - ✓ वर्ष 1707 में औरंगजेब के बाद कमजोर मुगल शासन।
  - ✓ क्षेत्रीय शक्तियों का उदय।
- भारत की विशाल संपदा:
  - ✓ यूरोपीय लोगों को मार्को पोलो और अन्य स्रोतों से भारत की अपार संपदा की जानकारी मिली।
- भारतीय वस्तुओं की भारी मांग:
  - ✓ मसाले, कैलिको, रेशम, कीमती पत्थर, चीनी मिट्टी जैसे भारतीय उत्पादों की भारी मांग।
- अरबों का नियंत्रण और तकनीकी प्रगति:
  - ✓ भारत के प्रमुख स्थल मार्ग अरबों के नियंत्रण में थे।
    - अतः सीधा व्यापारिक मार्ग उपलब्ध नहीं था।
  - ✓ 15वीं शताब्दी में यूरोप में जहाज निर्माण और नौवहन में बड़ी प्रगति हुई।
- बाजार के विस्तार हेतु खोज:
  - ✓ तीव्र औद्योगिकीकरण।
  - ✓ पूंजीवादी आकांक्षाओ को पूरा करने के लिए बाजार का विस्तार।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज

- आवश्यकता:
  - ✓ रोमन साम्राज्य (कुस्तुनतुनिया का पतन) का पतन।
  - ✓ मिस्र और फारस में अरबों का वर्चस्व।

- ✓ भारतीय वस्तुओं की उच्च मांग और कम होते संपर्क।
- ✓ समुद्री मार्ग (स्वेज नहर मार्ग) पर अरबों का नियंत्रण।
- ✓ यूरोपीय पुनर्जागरण के साथ जहाज निर्माण और नौवहन की कला में उन्नति।

➢ प्रयास-

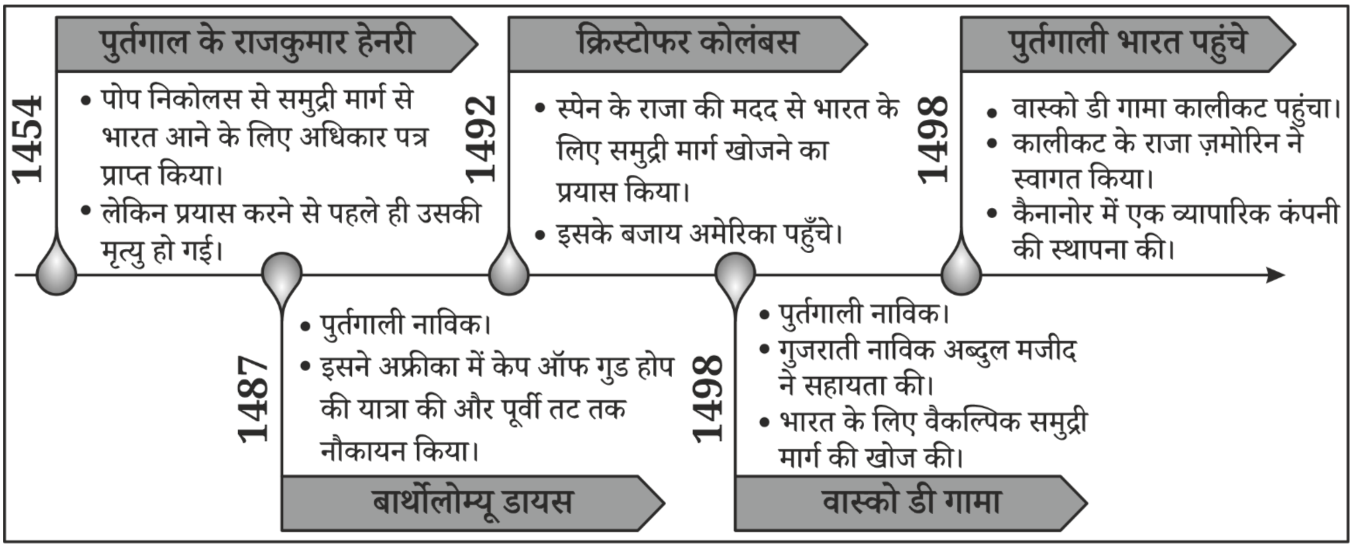

<u>विदेशी शक्तियाँ</u>

<u>पुर्तगाली</u>

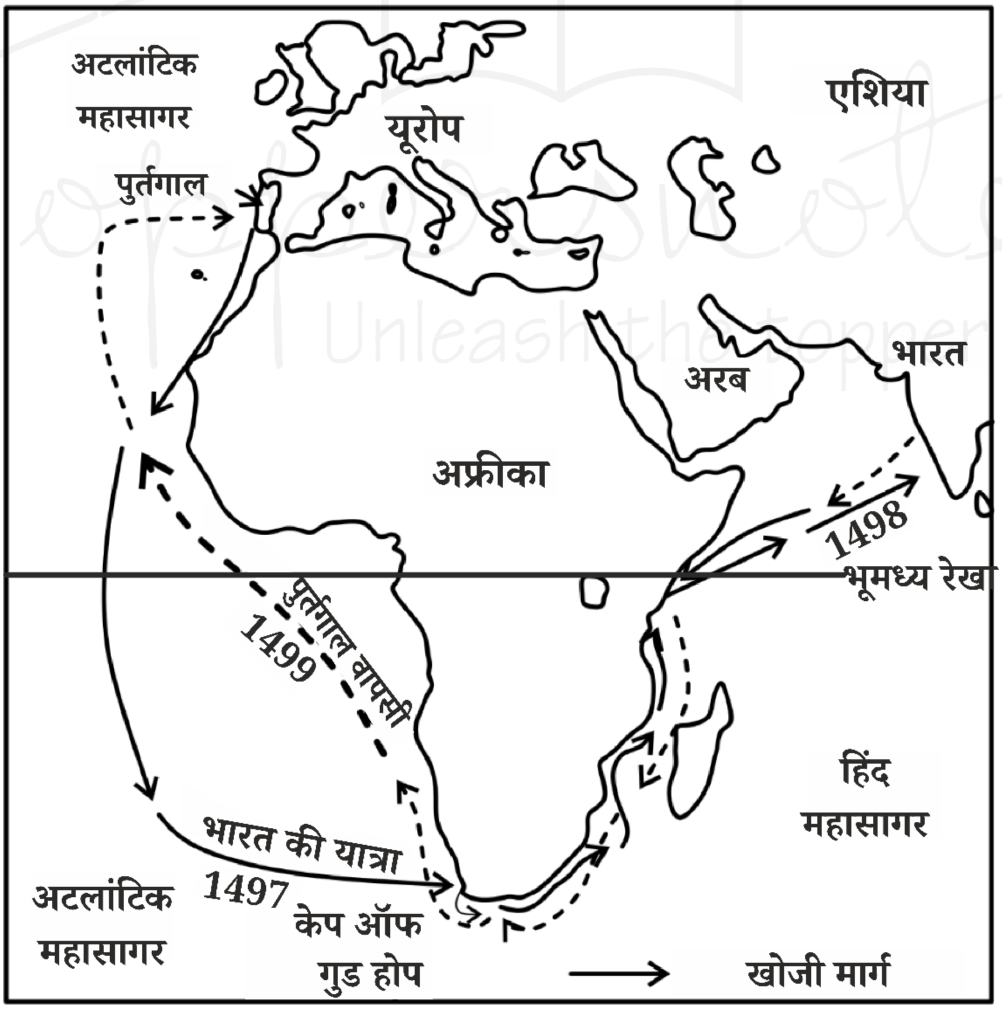

प्रमुख पुर्तगाली व्यक्तित्व

वास्कोडिगामा	➢ 17 मई 1498 को कालीकट बंदरगाह पहुँचा। ➢ कालीकट के राजा जमोरिन से व्यापार करने की अनुमति प्राप्त की। ➢ 1501 ई. में वास्कोडिगामा ने भारत की दूसरी यात्रा की, और हिंद महासागर के व्यापार में पुर्तगाली प्रभाव स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कैनानोरे में उन्होंने एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया।
पेड्रो अल्वारेज़ कैब्रेल	➢ 1500 ई. में भारत में (कालीकट में) पहला यूरोपीय कारखाना स्थापित किया। ➢ इसने पुर्तगालियों पर अरब हमले की सफलतापूर्वक प्रतिक्रिया दी। ➢ इसने कालीकट पर बमबारी की और कोचीन और कन्नूर के शासकों के साथ लाभकारी संधियाँ कीं।
फ्रांसिस्को डी अल्मीडा (1505-1509)	➢ 1505 ई. में, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने भारत में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। ➢ उसने अंजदिवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा बस्तियों का दुर्गीकरण करवाया। ➢ लक्ष्य: पुर्तगालियों को हिंद महासागर का स्वामी बनाना। ➢ इसकी नीति में नीले पानी की नीति और कार्टेज़ पद्धति प्रसिद्ध है। नीले पानी की नीति (Blue water policy) - ➢ हिन्द महासागर क्षेत्र में पुर्तगालियों का वर्चस्व स्थापित करने के लिए अल्मीडा की सामुद्रिक नीति को नीले पानी की नीति के नाम से जाना जाता है। कार्टेज़ पद्धति- ➢ 16वीं शताब्दी में हिंद महासागर में पुर्तगालियों द्वारा जारी नौसैनिक व्यापार लाइसेंस। ➢ इसी प्रकार की ब्रिटिश व्यवस्था = 20वीं सदी में नौसैनिक प्रणाली।
अल्फांसो डी अल्बुकर्क (1509-1515)	➢ भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक। ➢ इसने अन्य जहाजों के लिए परमिट प्रणाली शुरू की। ➢ इसने 1510 ई. में गोवा पर अधिकार कर लिया और गोवा "सिकंदर महान के समय के बाद से यूरोपीय लोगों के अधीन आने वाला पहला भारतीय क्षेत्र बन गया"। ➢ इसने पुर्तगाली पुरुषों को स्थानीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रोत्साहित किया और सती प्रथा को समाप्त करने पर बल दिया।

भारत में पुर्तगाली विस्तार

- ➢ इन्होने गोवा के आसपास मुंबई से दमन और दीव तक और फिर गुजरात तक के तटीय क्षेत्रों पर अधिकार किया, साथ ही चार प्रमुख बंदरगाहों, शहरों और गांवों पर नियंत्रण स्थापित किया।
- ➢ पूर्वी तट पर सैन्य चौकियां और बस्तियां स्थापित की, जैसे- चेन्नई में सैन थोमे और आंध्र में नागपट्टिनम।
- ➢ इन्हें 1579 ई. के शाही फरमान से व्यापारिक गतिविधियों के लिए बंगाल में सतगाँव के पास स्थापित होने का अवसर मिला।

भारत में पुर्तगाली प्रशासन

- ➢ महत्वपूर्ण पद-
  - ✓ वायसराय: यह प्रशासन का प्रमुखहोता था, जिसका तीन वर्ष का कार्यकाल होता था।

- ✓ वेडोर दा फ़ज़ेंडा: यह राजस्व, माल और जहाजी बेड़ों की आवागमन व्यवस्था का प्रभारी होता था।
- ✓ कैप्टन: यह किलों का प्रभारी होता था, जिसे 'फैक्टर' द्वारा सहायता दी जाती थी।

- ➢ नीतियां:
  - ✓ इन्होने नमक के उत्पादन पर एकाधिकार किया।
  - ✓ एक कस्टम हाउस स्थापित किया और तंबाकू पर कर लगाना शुरू किया।
  - ✓ इन्होने दासों का व्यापार शुरू किया, साथ ही हिंदू व मुस्लिम बच्चों को खरीदकर उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित किया।

पुर्तगालियों की धार्मिक नीति:

- ➢ इन्होने ईसाई धर्म को कट्टरता के साथ बढ़ावा देने का प्रयास किया।
- ➢ ये मुस्लिम और हिंदू धर्म के प्रति असहिष्णु थे।
- ➢ अकबर को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने का प्रयास:
  - ✓ अकबर के धर्मशास्त्र में गहन रुचि के कारण जेसुइट्स ने उसके दरबार में अच्छी छवि निर्मित की।
  - ✓ सितंबर 1579 में जेसुइट पादरी रोडोल्फो अक्वाविवा और एंटोनियो मोंसेरेट को अकबर के दरबार में भेजा गया।
    - इसके पश्चात 1590 ई. और 1595 ई. में भी ऐसे मिशन भेजे गए।
  - ✓ जहांगीर ने सिंहासन ग्रहण करने के बाद मुसलमानों को शांत किया और जेसुइट पादरियों की उपेक्षा की।
    - लेकिन 1606 ई. में उन्होंने फिर से जेसुइट पादरियों को समर्थन दिया।
    - साथ ही लाहौर में चर्च और कॉलेजियम बनाए रखने की अनुमति प्रदान की।

पुर्तगालियों का पतन:

- ➢ भारत में स्थानीय लाभ का आसपास के क्षेत्रों तक सीमित रहना।
- ➢ कट्टर धार्मिक नीतियों से सामाजिक अशांति का वातावरण निर्मित हुआ।
- ➢ इनकी भ्रष्टाचारी व्यापारिक गतिविधियों का कड़ा विरोध हुआ और ये समुद्री लुटेरों के रूप में कुख्यात हुए।
- ➢ इनकी अहंकार और हिंसा की प्रवृत्ति ने इन्हें भारतीय शासकों का दुश्मन बना दिया।
- ➢ ब्राजील की खोज से पुर्तगाल का उपनिवेशीकरण पश्चिम की ओर प्रतिस्थापित हुआ।
- ➢ डच और अंग्रेजों के समुद्री नौवहन कला सीखनें से इन्हें शक्तिशाली प्रतिद्वंदियों का सामना करना पड़ा।
- ➢ यूरोपीय व्यापारिक समुदायों में तीव्र प्रतिस्पर्धा शुरूआत।
  - ✓ डच और अंग्रेजों के पास अधिक संसाधन थे, जिससे उन्होंने पुर्तगालियों का एकाधिकार समाप्त कर दिया। इसी क्रम में मसाला व्यापार डचों के नियंत्रण में चला गया।
- ➢ गोवा को पुर्तगाल के विदेशी साम्राज्य के आर्थिक केंद्र के रूप में माना जाता था जिसे ब्राज़ील द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया।

पुर्तगालियों का महत्व

- ➢ सैन्य छावनी:
  - ✓ बंदूकों के उपयोग में सैन्य शक्ति का विकास हुआ
  - ✓ फील्ड गन के मुगल उपयोग और 'रकाब के तोपखाने' में योगदान दिया।
  - ✓ स्पेनिश मॉडल पर पैदल सेना के ड्रिलिंग समूहों की प्रणाली का विकास किया ।

Unleash the topper in you

- नौसेना तकनीक
  - ✓ बहु-मंजिला बड़े जहाजों का निर्माण किया गया था, जिन्हें नियमित मानसून हवाओं के साथ चलने के वजाय अटलांटिक महासागर की तेज़ हवाओं का सामना करने के लिए निर्मित किया गया था।
    - ■ इससे उन्हें भारी हथियार ले जाने की सुविधा प्राप्त हुई।
- जहाजों को मजबूत और युद्ध के लिए तैयार करने हेतु किलेनुमा प्रो और स्टर्न का उपयोग।
  - ✓ शाही शस्त्रागार और गोदीवाड़ा का निर्माण साथ ही पायलटों और मानचित्रण की एक नियमित प्रणाली निर्मित की गई।
  - ✓ राज्य की सेनाओं को निजी व्यापारी जहाजों के खिलाफ लगाया गया।
- सांस्कृतिक कार्य
  - ✓ गोवा में चांदी और सोने के कारीगरों की कला फली-फूली, और यह जगह जटिल फिलीग्री कला, नक्काशीदार पत्तों और रत्नों से जड़ी धातु कला का केंद्र बन गई।
  - ✓ पुर्तगालियों द्वारा गिरिजाघरों के आंतरिक भाग में लकड़ी का कार्य, मूर्तिकला और चित्रित छतें निर्मित की गयी।
    - ■ भारत में पुर्तगालियों द्वारा गोथिक वास्तुकला को प्रोत्साहन दिया गया।

डच

डच कम्पनी का ढ़ांचा एवं भारत आगमन

- कॉर्नेलिस हाउटमेन- 1596 ई. में भारत आने वाला पहला डच व्यक्ति।
- 1602 ई. में भारत से व्यापार करने के लिए हॉलैण्ड की संसद द्वारा एक कम्पनी “यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड” का गठन किया गया।
- डच कम्पनी एक अर्द्धसरकारी कम्पनी थी जिसे 17 सदस्यीय निदेशक मंडल द्वारा संचालित किया जाता था।
- कम्पनी के दो मुख्यालय थे- एम्सटर्डम (नीदरलैंण्ड), बाटविया (इण्डोनेशिया)
- कंपनी को युद्ध करने, संधियाँ करने, क्षेत्र पर कब्ज़ा करने और किले बनाने का अधिकार दिया गया

भारत में डच बस्तियाँ

- भारत में डचों की पहली फैक्ट्री 1605 ई. में मसूलीपत्तनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित हुई।
- 1609 ई. में पुलिकट में (मद्रास के उत्तर में) एक फैक्ट्री स्थापित की गयी।
- अन्य प्रमुख कारखाने- सूरत (1616), बिमलीपट्टम (1641), कराईकल (1645), चिनसुराह (1653), बारानगर, कासिमबाजार (मुर्शिदाबाद के पास), बालासोर, पटना, नागपट्टम (1658), कोचीन (1663)।

भारत में डचों के अधीन व्यापार

- विनिर्माण-
  - ✓ नील उत्पादक क्षेत्र : यमुना घाटी और मध्य भारत,
  - ✓ कपड़ा और रेशम: बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल,
  - ✓ शोरा (Saltpeter): बिहार
  - ✓ अफीम और चावल: गंगा घाटी।
- इनका काली मिर्च और मसालों के व्यापार पर एकाधिकार था।

डचों के पतन कारण

- मलय द्वीपसमूह के व्यापार में शामिल हुए।
- तीसरे आंग्ल-डच युद्ध (1672-74) में डच सेना ने बंगाल की खाड़ी में अंग्रेजी जहाजों पर कब्जा कर लिया। इसके जवाब में अंग्रेजों ने डचों को हराया।
    - ✓ 1759 ई. की बेदरा के युद्ध (हुगली, बंगाल) में डच पराजित हुए।
- कोलाचेल का युद्ध (1741):
    - ✓ यह युद्ध डच और त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा के मध्य हुआ।
    - ✓ इस युद्ध में डच शक्ति को मालाबार क्षेत्र में पूरी तरह खत्म कर दिया गया।
- आंग्ल-डच संधि (1814):
    - ✓ इसके तहत कोरोमंडल और बंगाल क्षेत्र में डच शासन पुनः स्थापित हुआ।
    - ✓ आंग्ल-डच संधि (1824):
        - इसके तहत इन क्षेत्रों को अंग्रेजों को वापस कर दिया गया।
        - 1 मार्च, 1825 ई. तक संपत्ति और प्रतिष्ठानों के सभी हस्तांतरण सुनिश्चित करना डचों के लिए बाध्यकारी बना दिया।

नोट-

- भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है

ब्रिटिश/अंग्रेज

- सहयोगी तत्व:
    - ✓ महारानी एलिजाबेथ प्रथम का चार्टर जारी हुआ।
    - ✓ 1580 ई. में फ्रांसिस ड्रेक ने वैश्विक यात्रा की।
    - ✓ 1588 ई. में स्पेनिश आर्मेडा पर अंग्रेजों की जीत।
- 1599 ई. में, 'मर्चेंट एडवेंचरर्स' नामक अंग्रेजी व्यापारिक समूह ने एक कंपनी स्थापित की।
- 31 दिसंबर 1600 को, रानी एलिजाबेथ प्रथम ने एक चार्टर जारी किया, जिसमें 'गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन्टू द ईस्ट इंडीज' नामक कंपनी को विशेष व्यापार अधिकार दिए गये।
- प्रारम्भ में, 15 वर्षों का व्यापारिक एकाधिकार दिया गया, जिसे मई 1609 में अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया गया।

Topper's notes Unleash the topper in you

भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियों की स्थापना

पश्चिम और दक्षिण में विस्तार

1609	➢ कैप्टन हॉकिन्स सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर के दरबार में पहुंचे, लेकिन सफल नहीं हुए। ➢ इसे पुर्तगालियों के विरोध का सामना करना पड़ा। ➢ नवंबर 1611 में आगरा छोड़ दिया।
1611	➢ मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और बाद में 1616 में एक कारखाना स्थापित किया।
1612	➢ कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास समुद्र में पुर्तगालियों को पराजित किया; ➢ 1613 ई. में थॉमस एल्डवर्थ ने सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहांगीर से अनुमति प्राप्त की।

1615	➢ जेम्स प्रथम के राजदूत सर थॉमस रो जहांगीर के दरबार में आए और फरवरी 1619 तक वहां रहे।
1632	➢ गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी किया गया 'स्वर्ण फरमान' प्राप्त हुआ।
1662	➢ जब चार्ल्स ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से शादी की, तो पुर्तगाल के राजा द्वारा बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था।
1687	➢ पश्चिमी प्रेसीडेंसी का केंद्र सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दिया गया।

बंगाल में विस्तार:

- 1651 ई. में बंगाल के सूबेदार शाह शुजा ने सभी शुल्कों के बदले 3,000 रुपये के वार्षिक भुगतान पर अंग्रेजों को बंगाल में व्यापार करने की अनुमति दी।
- बंगाल में फैक्ट्री: हुगली (1651), कासिमबाजार, पटना और राजमहल।
- बंगाल में कंपनी के पहले गवर्नर विलियम हेजेज ने अगस्त 1682 में बंगाल के मुगल गवर्नर शाइस्ता खान से शिकायतों के निवारण की अपील की।
  - ✓ इस अपील से अंग्रेजों और मुगलों के बीच शत्रुता बढ़ी।
- अंग्रेजों ने थाना (आधुनिक गार्डन रीच) के शाही किले पर कब्जा किया, हिजली (पूर्व मेदिनीपुर) और बालासोर के मुगल किलों पर हमला किया।
- अंग्रेजों ने 1,200 रुपये में सुतानती, गोविंदपुरा और कालीकट (कालीघाट) के तीन गांवों की जमींदारी खरीदी।
- 1700 ई. में फोर्ट विलियम स्थापित किया गया:
  - ✓ पूर्वी प्रेसीडेंसी (कलकत्ता) का मुख्यालय।
  - ✓ पहला अध्यक्ष: सर चार्ल्स आयर।

फर्रुखसियार का फरमान:

- 1715 ई. में जॉन सुरमन ने फर्रुखसियार से बंगाल, गुजरात और हैदराबाद में कंपनी को विशेषाधिकार देने वाले फरमान प्राप्त किए।
- कंपनी के लिए 'मैग्ना कार्टा' और इसके महत्वपूर्ण प्रावधान:
  - ✓ बंगाल में:
    - आयात और निर्यात को अतिरिक्त सीमा शुल्क से छूट दी गई, वार्षिक 3,000 रुपये की भुगतान व्यवस्था जारी रही।
    - माल के परिवहन के लिए दस्तक जारी करने की अनुमति।
    - कलकत्ता के आसपास और भूमि किराए पर लेने की अनुमति।
  - ✓ हैदराबाद में व्यापार शुल्कों से मुक्ति का विशेषाधिकार,
    - केवल मद्रास के लिए प्रचलित किराया देना पड़ता था।
  - ✓ सूरत में 10,000 रुपये के वार्षिक भुगतान पर सभी करों से छूट प्रदान की गयी।
  - ✓ बॉम्बे में निर्मित कंपनी के सिक्को को पूरे मुगल साम्राज्य में मुद्रा के रूप में मान्यता दी गई।

Toppersnotes Unleash the topper in you

फ्रांसीसी

फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी

- यह भारत में आने वाली अंतिम यूरोपीय शक्ति थी।
- फ्रांस के सम्राट लुई 14वे के मंत्री कॉल्बर्ट ने 1664 में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी। जिसे 'The compaginie des Indes Orientales' कहा गया।
- इसे सरकारी व्यापारिक कंपनी भी कहा जाता था क्योकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी तथा सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी
- इसे भारतीय और प्रशांत महासागर में फ्रांसीसी व्यापार पर 50 साल का एकाधिकार प्रदान किया गया।
- 1667 ई. में, फ्रेंकोइस केरॉन ने भारत के लिए एक अभियान का नेतृत्व किया और सूरत में प्रथम फ्रांसिसी फैक्ट्री स्थापित की।
- 1669 ई. में, कैरन के साथ आए एक फारसी मर्कारा ने गोलकुंडा के सुल्तान से पट्टा प्राप्त करने के बाद मसूलीपट्टनम में दूसरी फ्रैंच फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1673 ई. में, फ्रांसीसियों को शाइस्ता खान (बंगाल के मुगल सूबेदार) से कोलकाता के पास चंद्रनगर में एक बस्ती स्थापित करने की अनुमति मिली।

पांडिचेरी - भारत में फ्रांसीसी शक्ति का केंद्र

- 1673 ई. में, वालिकंदपुरम (बीजापुर सुल्तान के अधीन) के गवर्नर शेर खान लोदी ने मसूलीपट्टनम फैक्ट्री के निदेशक फ्रेंको मार्टिन को एक बस्ती के लिए भूमि प्रदान की।

- 1674 ई. में, पांडिचेरी की स्थापना हुई और फ्रेंको मार्टिन फ्रांसीसी गवर्नर बने।
- भारत के तटीय क्षेत्रों में अपनी फैक्ट्रियों की स्थापना की।
- महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र: माहे, कराईकल, बालासोर और कासिमबाजार।

फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी

- कंपनी डच और फ्रांसीसियों के मध्य युद्ध के कारण गंभीर रूप से प्रभावित हुई।
- 1688 की क्रांति के बाद इसे अंग्रेजों के साथ गठबंधन से मजबूत प्राप्त हुई, लेकिन वर्ष 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया।
- सितंबर 1697 में रिजविक की संधि के तहत पांडिचेरी को फ्रांसीसियों को वापस कर दिया गया।
- 1720 ई. में, फ्रांसीसी कंपनी को 'भारतीय क्षेत्र की स्थायी कंपनी' के रूप में पुनर्गठित किया गया, जिससे इसकी शक्ति में वृद्धि हुई।

ब्रिटिश फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता

- भारत में आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता इंग्लैंड और फ्रांस की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता, जो उत्तराधिकार के ऑस्ट्रियाई युद्ध से शुरू होकर सप्तवर्षीय युद्ध के साथ समाप्त होती है।
- 1740 ई. में, दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिति अनिश्चित थी। हैदराबाद के निज़ाम आसफ़जाह वृद्ध हो गये थे और पूरी तरह से पश्चिम में मराठों से संघर्ष में लगे हुए थे।
- हैदराबाद का पतन मुस्लिम विस्तारवाद के अंत का संकेत था और साहसी अंग्रेजों ने इसी परिस्थिति में अपनी रणनीतियां निर्मित की।

डेनिश (डेनमार्क)

- डेनमार्क की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1616 ई. में की गई थी |
- 1620 ई. में पहली फैक्ट्री त्रावणकोर (तंजोर ,तमिलनाडु) में स्थापित की गई |
- 1676 ई. में स्थापित कलकत्ता के पास सेरामपुर फैक्ट्री इनकी मुख्य बस्ती थी।
- इन्होने 1845 ई. में अपनी सभी फैक्ट्री अंग्रेजों को बेच दी एवं भारत से चले गए |
- डेनिश वाणिज्य की तुलना में अपनी मिशनरी गतिविधियों के लिए अधिक प्रसिद्ध थे।

Unleash the topper in you

कर्नाटक युद्ध

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)	➢ यह यूरोप में आस्ट्रिया के उतराधिकार युद्ध का विस्तार था। ✓ ब्रिटिश नौसेना ने कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में फ्रांसीसी जहाजों को जब्त कर फ्रांस को उकसाया गया। ✓ 1746 ई. में डूप्ले ने मॉरिशस के फ्रांसीसी गवर्नर एडमिरल ला बुर्डोने की मदद से मद्रास पर कब्जा कर प्रतिक्रिया दी। ➢ 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शापेल नामक संधि के साथ युद्ध समाप्त हुआ। ✓ मद्रास अंग्रेजों को वापस मिला और फ्रांस को उत्तरी अमेरिका में क्षेत्रीय लाभ मिला। ➢ यह युद्ध मद्रास में हुए सेंटथोमे के युद्ध (1748 ई.) के लिए प्रसिद्ध है। ➢ यह युद्ध फ्रांसीसी सेना और कर्नाटक के नवाब अनवर-उद-दीन की सेना के बीच हुई थी, जिनसे अंग्रेजों ने मदद की अपील की थी।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54ई.)	➢ फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले→ दक्षिण भारत में अपनी शक्ति और फ्रांसीसी राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने की कोशिश की ➢ हैदराबाद → निज़ाम-उल-मुल्क की मृत्यु के बाद → नासिर जंग, (पुत्र) और मुज़फ़्फ़र जंग (पोता) के बीच गृह युद्ध [नासिर जंग / मुज्जफर जंग] — [हैदराबाद के सिंहासन पर दावा किया] ➢ कर्नाटक→ अनवर-उद-दीन खान बनाम चंदा साहब। [अनवर-उद-दीन खान / चंदा साहब] — [कर्नाटक के सिंहासन पर दावा किया] ➢ फ्रांसीसियों ने मुजफ्फर जंग और चंदा साहिब का समर्थन किया जबकि अंग्रेजों ने नासिर जंग और अनवर-उद-दीन का साथ दिया। [डुप्ले + चंदा साहिब + मुजफ्फर जंग] — अंबर का युद्ध 1749 — [अनवर-उद-दीन खान को पराजित कर और मार डाला और चंदा साहिब को कर्नाटक का नवाब बनाया।] ➢ त्रिचनापल्ली में मुहम्मद अली की मदद करने में असफल होने पर, रॉबर्ट क्लाइव ने मद्रास के गवर्नर सॉन्डर्स के खिलाफ ध्यान भटकाने वाले हमले का प्रस्ताव रखा। ➢ रॉबर्ट क्लाइव ने अर्काट पर हमला कर उसे कब्जे में ले लिया। मैसूर, तंजौर और मराठा प्रमुख मोरारी राव ने त्रिचनापल्ली, क्लाइव और स्ट्रिंगर लॉरेंस की मदद की। ➢ डुप्ले की नीति के कारण फ्रांसीसियों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ, जिससे 1754 में डुप्ले को वापस बुला लिया गया। ➢ डुप्ले के बाद गोडेहु ने फ्रांसीसियों का नेतृत्व संभाला और अंग्रेजों के साथ समझौते की नीति अपनाई। ➢ 1754 में पांडिचेरी की संधि के साथ युद्ध समाप्त हुआ।
तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)	➢ 1756 ई. में यूरोप में ऑस्ट्रिया ने सिलेसिया को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया जिससे सप्तवर्षीय युद्ध (1756-63) की शुरूआत हुई। ➢ 1758 ई. में काउंट डी लाली के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने भारत में अंग्रेजों के सेंट डेविड और विजयनगरम किलों पर कब्जा कर लिया। ➢ वंडीवाश का युद्ध - तीसरे कर्नाटक युद्ध का निर्णायक युद्ध → 1760 ई. में तमिलनाडु के वंडीवाश (या वंदवासी) में अंग्रेजों ने जीत हासिल की। [जनरल आयर कूट ने ब्रिटिश सेना का नेतृत्व किया] — वंडीवाश का युद्ध — [काउंट डी लाली ने फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व किया जो युद्ध पराजित हुई] ➢ पेरिस शांति संधि (1763): फ्रांसीसियों को अपनी बस्तियों का उपयोग केवल वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए करने की अनुमति दी गई और किलेबंदी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। ➢ अंग्रेज भारतीय उपमहाद्वीप में सर्वोच्च यूरोपीय शक्ति के रूप में स्थापित हुए, क्योंकि डच पहले ही 1759 ई. के बेदारा के युद्ध में पराजित हो चुके थे।

फ्रांसीसियों पर अंग्रेजों की विजय के कारण

- अंग्रेजी कंपनी एक निजी संस्था थी और उस पर सरकार का कम नियंत्रण था।
- फ्रांसीसी कंपनी सरकार द्वारा नियंत्रित और नियोजित थी, और उसे सरकारी नीतियों का पालन करना पड़ता था।
- अंग्रेजी नौसेना फ्रांसीसी नौसेना से अधिक शक्तिशाली थी।
- अंग्रेजों के पास कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास जैसे महत्वपूर्ण बस्तियां थी, जबकि फ्रांसीसियों के पास केवल पांडिचेरी था।
- फ्रांसीसी कंपनी की आर्थिक स्थिति कमजोर थी, जबकि ब्रिटिश कंपनी की वित्तीय स्थिति मजबूत थी, जिसने उन्हें अपने प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध युद्ध में काफी मदद दी।

अन्य यूरोपीय शक्ति के खिलाफ अंग्रेजी की सफलता के कारण

व्यापारिक कंपनी की संरचना और प्रकृति	➢ अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का नियंत्रण प्रतिवर्ष निर्वाचित निदेशक मंडल द्वारा किया जाता था। ➢ फ्रांस और पुर्तगाली कंपनियाँ: राज्य के स्वामित्व वाली और सामंतवादी। ➢ फ्रांसीसी कंपनी में सम्राट का 60% से अधिक हिस्सा था और इसके निदेशकों को सम्राट द्वारा अंशधारकों में से नामित किया जाता था। ➢ कंपनी की समृद्धि को बढ़ावा देने में अंशधारकों ने बहुत कम रुचि दिखाई। ➢ कंपनी को 1725 और 1765 ई. के मध्य राज्य के एक विभाग के रूप में प्रबंधित किया जाता था।
नौसेना	➢ ब्रिटिश रॉयल नेवी: सबसे बड़ी और उन्नत नौसेना थी। ➢ स्पेनिश आर्मेडा और ट्राफलगर के युद्ध में फ्रांसीसियों पर जीत ने रॉयल नेवी को यूरोप की सबसे शक्तिशाली नौसेना बना दिया। ➢ भारत में भी ब्रिटिश ने अपनी तीव्र और सुदृढ़ नौसेना के कारण पुर्तगालियों और फ्रांसीसियों को हराया।
औद्योगिक क्रांति	➢ इंग्लैंड में नई मशीनों जैसे स्पिनिंग जेनी, स्टीम इंजन और पावर लूम का आविष्कार हुआ, जिससे कपड़ा, धातुकर्म, भाप ऊर्जा और कृषि के क्षेत्रों में उत्पादन में भारी सुधार हुआ।
सैन्य कौशल और अनुशासन	➢ अंग्रेजों के पास एक अनुशासित और कुशल प्रशिक्षित सेना थी। ➢ तकनीकी विकास ने सेना को आधुनिक हथियारों से युक्त किया।
स्थाई सरकार	➢ ब्रिटेन में स्थिर शासन व्यवस्था और कुशल शासक थे। ➢ फ्रांस में 1789 ई. में हिंसक क्रांति हुई और 1815 ई. में नेपोलियन की पराजय ने फ्रांस की शासन व्यवस्था को कमजोर कर दिया। ➢ डच ईस्ट इंडिया कंपनी, 1800 ई. में दिवालियापन और 1830 ई. की क्रांति से प्रभावित हुई।
धर्म के प्रति कम उत्साह	➢ ब्रिटेन में धर्म के प्रति उत्साह कम था और ईसाई धर्म के प्रसार में भी उसकी रुचि कम थी।
ऋण बाजार का उपयोग	➢ दुनिया के पहले केंद्रीय बैंक, बैंक ऑफ इंग्लैंड की स्थापना सरकारी ऋण को मुद्रा बाज़ारों से निर्धारित के लिए की गई थी। ➢ इस व्यवस्था ने ब्रिटेन को अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में अपनी सेना पर अधिक व्यय करने में सक्षम बनाया ।

Unleash the topper in you

2 CHAPTER

1857 के पूर्व प्रशासन

- वर्ष 1600 में गठित ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय शासकों के साथ 1611 में पूर्वी तट पर मसूलीपट्टनम (मछलीपट्टनम) और 1612 में पश्चिमी तट पर सूरत में व्यापारिक संबंध स्थापित किये।
- बाद में उन्होंने 1612 में सूरत में और 1616 में मछलीपट्टनम में कारखाने स्थापित किए। बॉम्बे को 1661 में कैथरीन ऑफ ब्रागांज़ा की शादी में दहेज के रूप में पुर्तगाल द्वारा ब्रिटिश क्राउन को सौंपा गया था।
- अंग्रेजों ने भारत में अपने कब्जे वाले क्षेत्रों को प्रांतों के रूप में विभाजित किया,
- जिनमे से तीन बंगाल, बॉम्बे (मुंबई) और मद्रास (चेन्नई) थे ।
- इन प्रान्तों को प्रेसिडेंसी कहा जाता था और प्रत्येक प्रेसिडेंसी का प्रशासन एक गवर्नर द्वारा चलाया जाता था , जिसमें गवर्नर-जनरल सर्वोच्च प्रमुख के रूप में कार्य करता था।

सिविल सेवाएं	➢ इन्हें लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा शुरू किया गया । ➢ कंपनी के क्षेत्रों का प्रशासन प्रभावी ढंग से चलाने के लिए सिविल सेवा की शुरुआत की गई। ➢ युवा सिविल सेवकों को प्रशिक्षित करने के लिए लॉर्ड वेलेस्ली ने सन 1800 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की ➢ चार्टर अधिनियम, 1853 ने सिविल सेवा भर्ती में ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को खत्म कर दिया और चयन के लिए खुली प्रतियोगी परीक्षाओं की शुरुआत की गई। प्रारंभ में यह परीक्षा लंदन में आयोजित की जाती थी जिसके कारण बहुत कम भारतीय इस परीक्षा का खर्च उठा पाते थे। ➢ सत्येंद्रनाथ टैगोर (रविंद्रनाथ टैगोर के बड़े भाई) भारतीय सिविल सेवा (ICS) में शामिल होने वाले पहले भारतीय थे।
पुलिस	➢ 1791 में लॉर्ड कार्नवालिस ने एक स्थायी पुलिस बल का गठन किया और पुलिस अधीक्षक (SP) का पद शुरू किया। ➢ बेंटिक ने SP का पद समाप्त कर दिया और कलेक्टर/मजिस्ट्रेट को उनके अधिकार क्षेत्र में पुलिस बल का प्रमुख बना दिया। ➢ पुलिस अधिनियम, 1861 द्वारा प्रान्तों की पुलिस हेतु दिशानिर्देश प्रस्तुत किए गए।
न्यायपालिका	➢ वारेन हेस्टिंग्स और लॉर्ड कार्नवालिस ने न्यायिक व्यवस्था को व्यवस्थित किया। ➢ जिला स्तर पर सिविल न्यायालय (दीवानी अदालतें) और आपराधिक न्यायालय (फौजदारी अदालतें) स्थापित किए गए। ➢ भारतीय कानूनों को संहिताबद्ध करने के लिए 1833 में एक विधि आयोग का गठन किया गया।

Toppersnotes Unleash the topper in you

1. बंगाल प्रेसीडेंसी

- बंगाल प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश साम्राज्य का एक उपखंड थी।
- पहले आधिकारिक तौर पर फोर्ट विलियम की प्रेसीडेंसी थी, जो बाद में में बंगाल प्रान्त फोर्ट विलियम के आसपास विकसित हुआ कलकत्ता शहर बंगाल प्रेसीडेंसी की राजधानी था।
- कई वर्षों तक बंगाल का गवर्नर भारत का वायसराय भी था और 1911 तक कलकत्ता भारत की राजधानी रहा।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए अन्य यूरोपीय कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा की।
- प्लासी (1757) और बक्सर(1764) युद्ध के बाद, ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्से पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था

प्रशासनिक परिवर्तन और स्थायी बंदोबस्त

- प्लासी युद्ध, 1757 ने बंगाल के प्रशाशन में अंग्रेजों के लिए मार्ग प्रशस्त किया ।
- वारेन हेस्टिंग्स ने बंगाल पर ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन को मजबूत किया ।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भूमि पर भूमिधारकों के अधिकारों को स्पष्ट कर उन्हें परिभाषित किया।
- 1793 में लॉर्ड कार्नवालिस ने भू-राजस्व प्रणाली में स्थायी बंदोबस्त लागू किया

2. 1857 तक संवैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास

रेग्युलेटिंग एक्ट, 1773

- अधिनियम के प्रावधान
  - ✓ 'बंगाल के गवर्नर' पद को 'अब बंगाल का गवर्नर-जनरल' पद बना दिया गया, एवम् बंगाल के पहले गवर्नर-जनरल या बंगाल के अंतिम गवर्नर- लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स थे।
  - ✓ गवर्नर-जनरल की सहायता के लिए चार सदस्यों की एक गवर्नर-जनरल परिषद बनाई गई।
  - ✓ बम्बई और मद्रास प्रेसीडेंसी के गवर्नरों को बंगाल के गवर्नर जनरल के अधीन कर दिया गया।
  - ✓ इसके तहत कलकत्ता (1774) में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना का प्रावधान किया गया, जिसमें कलकत्ता के फोर्ट विलियम में एक मुख्य न्यायाधीश और तीन अन्य न्यायाधीश थे।
  - ✓ इसने कंपनी के कर्मचारियों के लिए किसी भी प्रकार का निजी व्यापार करने या 'मूल निवासियों' से उपहार या रिश्वत लेने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
  - ✓ निदेशक मंडल (कंपनी का शासी निकाय) को भारत में अपने राजस्व, नागरिक और सैन्य मामलों की रिपोर्ट ब्रिटिश सरकार को देना अनिवार्य था।
- संशोधन (1781)
  - ✓ कलकत्ता के भीतर, सर्वोच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र परिभाषित किया गया, जिसके तहत प्रतिवादी को उसके व्यक्तिगत कानून से प्रशासित करना था।

पिट्स इंडिया एक्ट, 1784

- अधिनियम के प्रावधान
  - ✓ इसके तहत ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक और वाणिज्यिक गतिविधियों को विभाजित किया गया।
  - ✓ 'भारत में ब्रिटिश आधिपत्य' शब्द का पहली बार प्रयोग किया गया।
  - ✓ राजनीतिक मुद्दों के प्रबंधन के लिए नियंत्रण बोर्ड(Board of Control) का गठन किया गया
  - ✓ वाणिज्यिक मामलों का प्रबंधन निदेशक मंडल द्वारा किया जाएगा।
  - ✓ सभी नागरिक और सैन्य कार्यों की नियंत्रण बोर्ड द्वारा की जाती थी।
  - ✓ राजस्व की निगरानी भी नियंत्रण बोर्ड द्वारा की जाएगी।

1786 का अधिनियम

- अधिनियम के प्रावधान
  - ✓ इस अधिनियम में कॉर्नवॉलिस की मांग को स्वीकार करके उसे गवर्नर-जनरल तथा कमांडर-इन-चीफ दोनों की शक्तियाँ प्रदान कर दीं गई।
  - ✓ कॉर्नवॉलिस को परिषद के निर्णय को रद्द करने की अनुमति दी गई, बशर्ते निर्णय की जिम्मेदारी उसकी हो।
  - ✓ बाद में यह प्रावधान सभी गवर्नर जनरलों तक बढ़ा दिया गया।

चार्टर अधिनियम, 1793

- अधिनियम के प्रावधान
  - ✓ इस अधिनियम के तहत भारत में कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को अगले 20 वर्षों के लिए बढ़ा दिया।
  - ✓ कंपनी को भारत में व्यापार करने के लिए व्यक्तियों के साथ-साथ कंपनी के कर्मचारियों को भी लाइसेंस देने का अधिकार दिया गया।
  - ✓ गवर्नर-जनरल, गवर्नरो और कमांडर-इन-चीफ की नियुक्ति के लिए शाही अनुमोदन (सम्राट की सहमती) अनिवार्य था।

Unleash the topper in you

चार्टर अधिनियम, 1813

- अधिनियम के प्रावधान
  - ✓ भारत में कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त हो गया, लेकिन चीन से व्यापार एवम् चाय के व्यापार पर उसका एकाधिकार बना रहा।
  - ✓ कंपनी के शेयरधारकों को भारत के राजस्व से 10.5% लाभांश दिया जाने लगा।
  - ✓ कंपनी को क्राउन की संप्रभुता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, 20 वर्षों तक भारत के क्षेत्रों और राजस्व पर नियंत्रण बनाए रखने का अधिकार दिया गया।
  - ✓ भारत में पहली बार ब्रिटिश क्षेत्रों की संवैधानिक स्थिति को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया।
  - ✓ नियंत्रण बोर्ड की शक्तियों का विस्तार कर दिया गया।
  - ✓ भारत के मूल निवासियों हेतु साहित्य, शिक्षा और विज्ञान के पुनरुद्धार, संवर्धन और प्रोत्साहन के लिए प्रति वर्ष एक लाख रुपये की धनराशि का प्रावधान किया गया।
  - ✓ ईसाई मिशनरियों (धर्म प्रचारकों) को भारत आने और अपने धर्म का प्रचार करने की अनुमति दी गई।

चार्टर अधिनियम, 1833

- अधिनियम के प्रावधान
  - ✓ कंपनी का अधिकार 20 वर्षों के लियें बढ़ा दिया गया , परन्तु यह निश्चित किया गया की भारतीय क्षेत्रों पर शासन ब्रिटिश सम्राट के नाम से किया जाएगा
  - ✓ चीन के साथ व्यापार और चाय के व्यापार पर कंपनी का एकाधिकार भी समाप्त कर दिया गया।
  - ✓ यूरोपीय का भारत में आप्रवासन (immigration) और उनके द्वारा संपत्ति अधिग्रहण पर सभी प्रतिबंध हटा दिए गए।
  - ✓ भारत में सरकार के वित्तीय, विधायी और प्रशासनिक केंद्रीकरण की परिकल्पना की गई थी:
    - प्रशासनिक: गवर्नर-जनरल को कंपनी के सभी नागरिक और सैन्य मामलों के अधीक्षण, नियंत्रण और निर्देशन करने की शक्ति दी गई।
    - बंगाल, मद्रास, बम्बई और अन्य सभी क्षेत्रों को गवर्नर-जनरल के पूर्ण नियंत्रण में रखा गया।
    - वित्तीय: सभी राजस्व गवर्नर-जनरल के अधिकार के तहत जुटाए जाने थे और उसे ही इनके व्यय का अधिकार भी होगा
    - विधायी : मद्रास और बम्बई सरकार की विधायी शक्तियाँ समाप्त कर दी गई और उन्हें ऐसी कानूनी परियोजनाओं जिन्हें वे समीचीन समझते हो को गवर्नर-जनरल के समक्ष प्रस्तावित करने का अधिकार छोड़ दिया गया,
  - ✓ भारतीय कानूनों को संहिताबद्ध और एकीकृत किया जाना था। गवर्नर-जनरल की परिषद में विधि विशेषज्ञ के रूप में एक सदस्य जोड़ा गया
  - ✓ भारत में दास प्रथा को गैर क़ानूनी घोषित कर अंततः उसे समाप्त करने के लिए गवर्नर-जनरल से कदम उठाने का आग्रह किया गया। (दास प्रथा को 1843 में समाप्त कर दिया गया।)

1853 का चार्टर अधिनियम

- अधिनियम के प्रावधान
  - ✓ कंपनी का क्षेत्रों पर नियंत्रण जारी रहेगा, जब तक संसद कुछ और प्रावधान न करे
  - ✓ निदेशक मंडल के सदस्यों की संख्या घटाकर 18 कर दी गई।
  - ✓ सेवाओं/नियुक्तियों पर कंपनी का संरक्षण समाप्त कर दिया गया - सेवाओं को अब प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु खोल दिया गया।
  - ✓ विधि विशेषज्ञ को गवर्नर-जनरल की कार्यकारी परिषद का पूर्ण सदस्य बनाया गया।
  - ✓ भारत में ब्रिटिश सरकार के कार्यकारी और विधायी कार्यों का विभाजन आगे बढ़ाया गया साथ ही विधायी उद्देश्यों के लिए छह अतिरिक्त सदस्यों को शामिल किया गया। भारतीय विधानमंडल में स्थानीय प्रतिनिधित्व की शुरुआत की गई एवं विधायी शाखा को भारतीय विधान परिषद कहा गया।
  - ✓ हालांकि, किसी कानून को लागू करने के लिए गवर्नर-जनरल की सहमति आवश्यक थी, और गवर्नर-जनरल विधान परिषद के किसी भी विधेयक को वीटो कर सकते थे।